11. एक पत्र की आत्मकथा

मैं एक पत्र हूँ। मैं उम्र में बहुत बड़ा नहीं हूँ। हाल ही में मेरा जन्म 03 अगस्त 2011को हुआ। मेरा जन्म स्थल गया जिले का धरमपुर गाँव है। धरमपुर में एक लड़की रहती है। उसका नाम शांति है। शांति पाँचवीं की छात्रा है। शांति का एक चचेरा भाई है, रमेश। रमेश रहता है दिल्ली में।

03 अगस्त की शाम शांति ने एक सुन्दर-सी राखी बनाई। उसने रमेश को एक पत्र लिखा और एक लिफाफे में पत्र एवं राखी को बंद कर दिया । इस तरह मेरा जन्म हुआ। शांति की माँ दूसरे दिन पास के कस्बा बिशनपुर जाने वाली थी। शांति ने माँ से कहा कि ज़रा रमेश भाई की चिट्ठी बिशनपुर की पत्र-पेटी में डाल दीजिएगा। अगले दिन मैं माँ के साथ बिशनपुर पहुँचा। वहाँ बहुत चहल-पहल थी। मैं इसका मज़ा ले ही रहा था कि ढप! मैं एक काली-सी गुफा में जा कर गिर पड़ा। यह पत्र-पेटी थी। मैं पत्रों के ढेर पर जा गिरा। अरे! ये तो मेरे जैसे थे। बस फिर क्या था? हो गयी दोस्ती!

मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था। पर मेरे कुछ दोस्त फीके-नीले रंग के थे, कुछ एक पीले कार्ड थे, कुछ सफेद या खाकी लिफाफे पहने हुए थे, कुछ लंबे थे, तो कुछ चौड़े। वे सब अलग-अलग जगह जा रहे थे।

अब मुझे चिंता होने लगी कि मैं दिल्ली में रमेश के घर तक कैसे पहुँचूँगा। कहीं और पहुँच गया तो? किसी को कैसे पता चलेगा कि मुझे कहाँ जाना है?

एक सफ़ेद लिफाफा जिस पर लाल व नीली धारियाँ बनी थीं, सबसे बातें करने लगा। कहने लगा, "पता है, मुझे अमरीका देश जाना है। रास्ते में बहुत बड़ा समुद्र

है, इसलिए मैं रेल या बस से नहीं, हवाई जहाज से अमरीका पहुँचूँगा। सुना है जब हवाई जहाज नहीं बने थे, तब समुद्र में चलने वाले बड़े-बड़े जहाज से पत्र भेजे जाते थे।''

खटाक! ताला खुलने की-सी आवाज़ आई। पेटी में उजाला हुआ। किसी का हाथ अंदर आया और हम सब पत्रों को निकाल-निकाल कर एक थैले में डालने लगा। थैले में बंद होने से पहले मैंने देख लिया कि यह खाकी वर्दी पहने हुए डाकिया है। उसने पेटी में ताला डाला और हमारे बोरे को साइकिल पर रखकर चल पड़ा। जल्दी ही हम बिशनपुर डाक घर पहुँच गए। डाकिए ने हमारे बोरे को डाकघर की मेज़ पर उलट दिया। फिर वह एक भारी ठप्पे से हम पर लगे टिकट पर सील लगाने लगा- ठप-ठपा-ठप, ठप-ठपा-ठप! ठप! उसके हाथ बड़ी तेज़ी से चल रहे थे। सील लगाना खत्म करके उसने हमें इकट्ठा किया और एक दूसरी मेज़ पर पटक दिया।

मैंने सोचा, "अब कुछ देर चैन की साँस लेकर सुस्ता लूँ।" पर वहाँ डाकघर के दो लोग आए और उन्होंने हमें बाँटना शुरू किया। इस तरह पत्रों के एक ढेर के बजाय दो ढेरियाँ बन गईं। एक गया जिले की और एक जिले के बाहर की।

तब तक डाकघर की एक महिला दो खाकी बोरे लेकर मेज़ के पास आईं और बोलीं, "जिले के बाहर वाली डाक आर.एम.एस. के बोरे में डाल दो और जिले वाली डाक गया डाकघर के बोरे में।

डाकिए ने वैसा ही किया। मुझे आर.एम.एस. के बोरे में डाला गया। मेरा दिल बैठा जा रहा था ''मुझे गया क्यों ले जा रहे हैं? मुझे तो दिल्ली जाना है और ये आर.एम.एस क्या चला है?'' न जाने कैसे उस बोरे ने मेरे मन की बात सुन ली। मुझे सहलाते हुए बोलने लगा ''दिल्ली बहुत दूर है। वहाँ तुम रेलगाड़ी से जाओगे। दिल्ली जाने वाली रेलगाड़ी गया स्टेशन पर रुकती है, इसलिए मैं तुम्हें गया आर.एम.एस. ले जा रहा हूँ। आर.एम.एस. का अर्थ है–'रेलवे मेल सर्विस'। हर बड़े स्टेशन पर इसका कार्यालय है। यहाँ पर आसपास की डाक इकट्ठी की जाती है और दिशावार छाँटी जाती है। फिर उन्हें ट्रेन से भेज दिया जाता है।" मुझे बोरे की बात से तसल्ली हुई। हम कब गया पहुँचे मुझे पता ही नहीं चला।

एकाएक से किसी ने बोरे का मुँह खोला और बाहर की रोशनी से मेरी आँखें चौंधिया गईं। एक डाकिए ने सारे पत्र बाहर मेज़ पर उलट दिए। चार–पाँच लोग फुर्ती से आए और फिर शुरू हुई छँटाई। मैं ढेर के ऊपर की ओर था। मैंने जल्दी से अपने आस–पास नज़र दौड़ाई एक बहुत बड़े कमरे में खूब सारे लोग थे। अलग–अलग मेज़ों पर छँटाई चल रही थी। लेकिन यह क्या? दीवार में खूब सारे छोटे–छोटे खानों वाली खुली आलमारियाँ थीं। ऐसे ही कुछ खाने आड़े में भी बने थे। हर खाने के ऊपर कुछ लिखा था। हमारे अलावा और बहुत सारे पत्र थे, बहुत सारे बंद बोरे भी।

एक मैडम कुछ पत्र लेतीं और उन पर लिखा पता पढ़–पढ़ कर अलग–अलग खानों में डाल देती। मेरी बारी अब आई यह सोचकर मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। तभी मैडम ने मुझे एक अंधेरे–से खाने में डाल दिया। उसके ऊपर लिखा था– **दिल्ली।** वहाँ और भी कई सारे पत्र थे। उन सभी पर दिल्ली के पते लिखे थे। थोड़ी देर बाद एक डाकिए ने हमें निकाल कर एक बोरे में डाल कर बन्द कर दिया। बोरे में पड़े–पड़े मुझे नींद लग गई। हर थोड़ी देर में झटका पड़ता मानो बोरे को उठा कर कोई कहीं पटक रहा हो। जब मेरी नींद खुली तो ज़मीन हिल रही थी और रह–रहकर सीटी की आवाज़ आ रही थी। मैं समझ गया कि मुझे गया जंक्शन से दिल्ली की रेलगाड़ी में चढ़ा दिया गया है।

पूरे 18 घंटे चलने के बाद हम दिल्ली स्टेशन पहुँचे। गाड़ी से निकाल कर हमें एक लाल रंग की छोटी बस में लाद दिया गया। इस तरह मैं दिल्ली के बड़े डाकघर में पहुँचा। वहाँ के डाकिए ने मुझे अपनी थैली में डाल दिया और हम साइकिल पर निकल पड़े। हर ज़गह मेरी मुलाकात नए पत्र मित्रों से होती और मेरे पुराने साथी छुटते रहते। डाकिये ने मुझे किसी के घर के दरवाजे के नीचे से अंदर सरका दिया। थोड़ी देर बाद रमेश की माँ बाहर से घर आई तो उन्होंने मुझे उठाकर मेज़ पर रख दिया। शाम को जब रमेश घर लौटा तो मुझे पाकर वह बहुत खुश हुआ। राखी के दिन रमेश ने वही राखी बाँधी और मुझे उठाकर और पत्रों के साथ एक आलमारी में रख दिया। यही अब मैं एक आराम की ज़िन्दगी बिता रहा हूँ।

शब्दार्थ

बौछार	–	भरमार
विविध	–	अनेक
पत्र-पेटी	–	लेटर-बॉक्स
वर्दी	–	पोशाक
आर.एम.एस.	–	रेलवे मेल सर्विस (रेल मेल सेवा)
तसल्ली	–	ढाढ़स

अभ्यास

बातचीत के लिए

(क) डाकिया चिट्ठी के अलावा और क्या-क्या बाँटता है?

(ख) यदि आपको पत्र लिखने का मौका मिले तो, आप किसे पत्र लिखना चाहेंगे और क्यों?

(ग) आप उस पत्र में क्या-क्या लिखेंगे?

(घ) जिसको पत्र लिखा जा रहा है, उस तक पत्र पहुँच जाए इसके लिए पत्र पर क्या लिखना होगा?

पाठ से

(क) एक पत्र की आत्मकथा कौन कह रहा है और किसके बारे में कह रहा है?

(ख) हवाई जहाज से भेजे जाने वाले पत्र को आप कैसे पहचानेंगे?

(ग) आर. एम. एस. का क्या अर्थ होता है?

(घ) आर. एम. एस. कार्यालय में पत्रों के साथ क्या-क्या होता है?

(ङ) डाक से भेजे जाने वाले पत्र पर डाक टिकट क्यों लगाते हैं?

(च) पत्र पर लगे डाक टिकट पर सील क्यों लगाया जाता है?

(छ) भेजे जाने के दौरान विभिन्न स्थानों पर पत्रों की छँटाई की जाती है, क्यों?

भाषा के नियम

(1) नीचे दिए गए शब्द-जोड़ों से वाक्य बनाइए -

भीड़-भाड़ - .....

चहल-पहल - .....

आस-पास - .....

अलग-थलग - .....

(2) नीचे दिए गए वाक्यों में एक शब्द किसी दूसरे की विशेषता बता रहा है। विशेषता बताने वाले शब्द को 'विशेषण' कहते हैं। वाक्यों में विशेषण शब्दों पर घेरा लगाइए –

(क) शांति ने सुन्दर-सी राखी बनाई।

(ख) मैं एक काली-सी गुफा में जाकर गिर पड़ा।

(ग) मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था।

(घ) डाकिया खाकी वर्दी पहने हुए था।

(ङ) पहले समुद्र में चलने वाले बड़े-बड़े जहाजों से पत्र भेजे जाते थे।

(च) तुम डरो नहीं, हम तुम्हें सही ठिकाने पर पहुँचा देंगे।

3. बताइए, रेखांकित सर्वनाम शब्द किसके लिए आए हैं–

(क) वे सब अलग-अलग जगह जा रहे थे। ----------

(ख) मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था। ----------

(ग) उसने पेटी में ताला डाला । ----------

(घ) उन्होंने हमें बाँटना शुरू किया। ----------

(ङ) उसने रमेश को एक पत्र लिखा। ----------

अनुमान लगाइए

(i) शांति ने 03 अगस्त 2011 को पत्र लिखा। रमेश तक वह पत्र कब पहुँचा होगा?

(ii) शांति का पत्र कहाँ-कहाँ से गुजरते हुए रमेश तक पहुँचा?

माँ —> थैली —> ☐ —> ☐ —> ☐ —> ☐ —> रमेश

पता कीजिए

हमलोग पत्र लिखने अथवा भेजने के लिए डाकघरों से क्या-क्या खरीदते हैं? आजकल इनके क्या मूल्य हैं?

नाम	मूल्य

पत्र लिखिए

अपनी पाठ्यपुस्तक में से सबसे मज़ेदार कहानी के बारे में अपनी मामीजी को पत्र लिखिए ।

संवाद

1. पत्र जब पेटी में बाकी पत्रों से मिला तो उनके बीच क्या बातचीत हुई होगी? कल्पना कीजिए और उनके संवाद बोलिए।
2. भारी ठप्पे से पत्रों पर सील लगाने पर उन्हें कैसा लगा होगा? उन्होंने डाकिए से क्या कहा होगा? कल्पना कीजिए और संवाद बोलिए।

कुछ इस तरह

इस पाठ में पत्र ने अपनी आत्मकथा बताई है।

1. आप भी अपने बारे में बताते हुए अपनी आत्मकथा लिखिए।

बूझो तो जानें

दो रुपए का एक लिफाफा,
मिलता था अगर पहले,
आज डाकघर के लिफाफे
दो मिलते ले दहले ।।
बारह रुपए दे मुनिया ने,
माँगे पाँच लिफाफे,
कितने शेष और फिर देकर,
मुनिया गहे लिफाफे।